B- III
L-35
MIH

प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय आन्दोलन में इस बात पर बल दिया गया कि उन मुद्दों को लेकर आन्दोलन करना है जिसमें आपसी फूट की सम्भावना न हो। जैसे- जाति, धर्म, क्षेत्र इत्यादि के आधार पर।

नमक का मुद्दे के रूप में चयन :

- नमक पर करों की दर अधिक थी और आम लोगों के लिए परेशानी का कारण थी।
- गांधीवादी आन्दोलन में इस तथ्य पर अधिक बल था कि समाज के अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी हो।
- नमक कानून पर यदि सरकार पीछे हटती है तो लोगों को आर्थिक राहत मिल सकती है एवं तटवर्ती क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ सकते हैं।
- यदि सरकार पीछे नही हटती है तो यह धारणा कमजोर होगी कि सरकार भारतीयों की शुभ-चिंतक नही है।

विशेषताएँ :-

इस आन्दोलन में भी गांधीवादी आन्दोलन से संबंधित सभी महत्वपूर्ण विशेषताएं दिखाई पड़ती है जैसे- आन्दोलन को प्रारम्भ करने एवं वापस लेने की घोषणा, निश्चित कार्यक्रम, लक्ष्य, आन्दोलन को हिंसात्मक रचना तथा लोचशीलता इत्यादि।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR
Scanned by CamScanner

लक्ष्य :-

- आन्दोलन का लक्ष्य था पूर्ण स्वराज अर्थात राजनीतिक स्वतंत्रता, साथ ही 1931 में कराची अधिवेशन में पूर्ण स्वराज के अन्तर्गत आर्थिक न्याय नागरिक अधिकार इत्यादि के सम्बन्ध में भी प्रस्ताव पारित किए गये।

- आन्दोलन का प्रसार अखिल भारतीय स्तर पर शहरों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक तौर पर रहा।

- ग्रामीण क्षेत्रों में संगठनात्मक ढांचे के कारण दूरवर्ती क्षेत्रों तक आन्दोलन का प्रसार दिखा।

- सीमावर्ती क्षेत्रों में भी आन्दोलन का व्यापक प्रभाव दिखा जैसे - उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में खान अब्दुल गफ्फार खान का नेतृत्व तथा उत्तर-पूर्व के क्षेत्र में रानी गिडनेल्यु के नेतृत्व में।

- कुछ रियासतों की भागीदारी आन्दोलन में रही - जैसे- कश्मीर में शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में और अलवर (राजस्थान) में के. एम. अशरफ के नेतृत्व में लोगों की भागीदारी दिखी।

- सामाजिक दृष्टिकोण से देखें तो इसमें छात्रों एवं महिलाओं, किसानों पूँजीपतियों, एवं जन-जातीय समाज की भागीदारी रही।

- तुलनात्मक रूप से मुसलमानों एवं मजदूरों की कम भागीदारी रही।

Scanned by CamScanner

- कुछ क्षेत्रों में बच्चों की सक्रिय भूमिका दिखी जैसे गुजरात में वानर सेना एवं मंजरी सेना का गठन किया गया।
- प्रभात फेरी का बड़ी संख्या में आयोजन किया गया।
- चन्द्रमोहन सिंह गढ़वाली के नेतृत्व में सैनिकों ने उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में अहिंसक आन्दोलनकारियों पर गोली चलाने से इनकार किया।
- आन्दोलन को प्रत्येक स्थिति में अहिंसात्मक रखने पर बल, हालांकि आन्दोलन के समानांतर कई हिंसात्मक घटनायें हुई फिर भी आन्दोलन जारी रहा।

कार्यक्रम के दृष्टिकोण से-

- कार्यक्रम के दृष्टिकोण से देखें तो असहयोग की तरह यहाँ भी विरोधात्मक एवं रचनात्मक कार्यों को महत्व दिया गया, रचनात्मक कार्य पहले की तरह ही था हालाँकि आन्दोलन के द्वितीय चरण में हरिजन उत्थान आन्दोलन को गांधीजी ने अधिक महत्व दिया।
- लेकिन विरोधात्मक कार्यक्रम असहयोग की तुलना में अधिक उग्र थे, सरकारी कानूनों को चुनौती दी गई, सरकार के आर्थिक हितों को अधिक चोट पहुँचाई गई शराब की दुकान पर धरना, कर न देने का आन्दोलन इत्यादि।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

- यह पहला आन्दोलन था जो स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में तिरंगा केन्द्र में रखकर संचालित किया गया।
- असहयोग की तरह परिस्थितियों को देखते हुए गांधी जी ने इस आन्दोलन को वापिस लेने की घोषणा की लेकिन सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने राष्ट्रीय आन्दोलन को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाया।

तथ्यात्मक जानकारी :-

- गांधी जी ने दांडी तट पर नमक कानून का उल्लंघन किया इसके बाद धरसाना नमक निर्माण केन्द्र की ओर प्रस्थान किया - गांधी जी गिरफ्तार हुये उनके बाद सरोजनी नायडू, मनिलाल गांधी ने नेतृत्व किया।
- वेब मिलर नामक अमेरिकी पत्रकार ने इन घटनाओं का आंखों देखा वर्णन किया।

अन्य यात्राएं :-

- राजगोपालाचारी की यात्रा तिरूचिरापल्ली से वेदारण्यम तक।
- के. केलप्पन की यात्रा कालीकट से पायनूर तक।
- आन्ध्र प्रदेश में - शिविरम (कापलिप) की स्थापना की गई, नामक कानून के उल्लंघन के लिए.
  नेता → दुग्गीराला बालकृष्णया

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES

Scanned by CamScanner

उड़ीसा में -
↓
नेता - गोपबंधु चौधरी

असम में
↓
नेता - श्री मति चन्द्रप्रभा

→ उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत (NWFP)

नेता → खाँन अब्दुल गफ्फार खाँ (भारत रत्न से सम्मानित)

संस्था - खुदाई खिदमतगार
(खुदा / ईश्वर की सेवा में)

खान अब्दुल गफ्फार को

↓ सीमांत गांधी भी कहा जाता है

↓ बादशाह खान भी कहा जाता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

हरिजन उत्थान संबंधी :-

- गाँधी जी ने 1932 में - छुआछूत के विरोध में एक संस्था बनाई।
- 1933 में हरिजन नामक अखबार निकालना प्रारम्भ किया और इसी वर्ष हरिजनयात्रा की शुरुआत की।

Scanned by CamScanner

गाँधी इरविन पैक्ट - 5 मार्च 1931

दिल्ली पैक्ट भी कहा जाता है-

मध्यस्थता :- तेज बहादुर सप्रु , एम.आर. जयकर

विरोध करने वाले - सुभाष चन्द्र बोस

प्रावधान :-

(i) कांग्रेस की जिन मांगों को सरकार ने मान लिया -

- राजनीतिक बंदियों को रिहा - (इन पर हिंसा का आरोप है इन्हें रिहा नही किया जायेगा
- शांतिपूर्ण तरीके से शराबों की दुकानों पर धरना की अनुमति ।
- तटवर्ती इलाकों में नमक निर्माण की अनुमति ।
- त्यागपत्र देने वाले सरकारी कर्मचारियों से उदार व्यवहार ।
- जिन आन्दोलनकारियों से मुआवजे की राशी नही वसूली गई है इन्हे राहत दी गई ।

कांग्रेस की जिन मांगों को सरकार ने नही माना -

- पुलिस अत्याचार की नागरिकों के द्वारा जाँच
- भगत सिंह एवं उनके सहयोगियों की फाँसी की

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

सजा को स्थगित करने की माँग।

कांग्रेस ने सरकार की जिन माँगों को माना-

- आन्दोलन को स्थगित करने की माँग
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस भाग लेगी।

सकारात्मक :-

- बराबरी के स्तर पर सरकार एवं कांग्रेस के बीच बात हुई इससे गाँधी जी एवं कांग्रेस का महत्व बढ़ा।
- सरकार को कुछ मुद्दों पर रियायतें देनी पड़ी यह भी एक प्रकार से कांग्रेस की मनोवैज्ञानिक जीत थी।
- यह समझौता गाँधीवादी रणनीति का ही भाग था क्योंकि गाँधी जी जन आन्दोलन को लम्बे समय तक रखना नहीं चाहते थे।
- जनता को इससे राहत मिली।

आलोचनात्मक / नकारात्मक -

- समझौते के कारण सरकार को आर्थिक राहत मिली जब दूसरी बार आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तब सरकार ने आन्दोलन का अधिक कठोरता से दमन किया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

Scanned by CamScanner

- भगत सिंह की फांसी की सजा स्थगित न होने के कारण इस समझौते की आलोचना की गई।
- कई नेताओं का यह आरोप था कि समझौते के कारण आन्दोलन का कीमती वक्त हाथ से निकल गया।

कांग्रेस का करांची अधिवेशन मार्च 1931

अध्यक्ष वल्लभभाई पटेल

- दिल्ली समझौते को मंजूरी प्रदान की गई और भगत सिंह के साहस की प्रशंसा की गई।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

मूल अधिकारों पर प्रस्ताव रखा : जवाहरलाल नेहरू

- राज्य, जाति, धर्म, क्षेत्र इत्यादि के आधार पर भेदभाव नही करेगा।
- संगठन बनाने की स्वतंत्रता - अभिव्यक्ति की आजादी होगी।
- बच्चों को निःशुल्क शिक्षा का अधिकार होगा।
- अल्पसंख्यकों को संस्कृति के संरक्षण का अधिकार होगा।
- वयस्क मताधिकार - महिला / पुरूष दोनों को मत देने का अधिकार।

आर्थिक नीतियों पर प्रस्ताव :-

भारी उद्योग, खनन, परिवहन इत्यादि पर राज्य का नियंत्रण होगा।

किसानों मजदूरों पर प्रभाव :

- भू-राजस्व में कटौती, कर्ज से राहत, संगठन बनाने की स्वतंत्रता इत्यादि किसानों को दे दी जायेगी।
- मजदूरों के लिए न्यूनतम मजदूरी, संगठन बनाने की स्वतंत्रता इत्यादि के प्रावधान किए जायेंगे।

गोलमेज सम्मेलन

- भारत में आगामी संवैधानिक सुधार पर विचार-विमर्श करने के लिए ब्रिटेन में तीन गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- सम्मेलन में ब्रिटिश सरकार एवं राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि भारतीय सरकार एवं राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि के साथ-साथ भारत के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि एवं देशी रियासतों के प्रतिनिधि को सम्मेलन में आमंत्रित किया गया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

प्रथम सम्मेलन - 12 नवंबर 1930 से 19 जनवरी 1931 तक

कांग्रेस ने - भाग नही लिया

डॉ अम्बेडकर - दलितों के प्रतिनिधि थे -
तीनों सम्मेलन में भाग लिया
(एक मात्र नेता थे जिन्होंने तीनों सम्मेलन में भाग लिया
सरकार ने आमंत्रित किया)

मुस्लिम लीग - जिन्ना, शफी

हिन्दू महासभा - जयकर (एम. आर जयकर)

महिलाओं के प्रतिनिधि - जहाँआरा शहनवाज
- राधाबाई सुब्बारायन

द्वितीय सम्मेलन - 7 सितम्बर 1931 से 1 दिसंबर 1931 तक

आयोजित - लंदन

कांग्रेस ने - भाग लिया

प्रतिनिधि थे - गांधी जी

सहयोगी थे - महादेव देसाई
- मैडलिन स्लेड (मीरा बेन)

महिलाओं के प्रतिनिधि - सरोजनी नायडू

KCS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner